'रसिकेन्द्र'—नाटक-माला का प्रथम पुष्प।

अज्ञात-वास

या

(कीचक-बध पौराणिक नाटक)

"भाग्य में सुख दुख लिखा जो वह सभीको भोग्य है,
पर कभी नर को न अपना धर्म तजना योग्य है॥"

रसिकेन्द्र